वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 236

गणिनी ज्ञानमती परिचय
एवं
प्रश्नोत्तरी

-रचयित्री-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

जम्बूद्वीप हस्तिनापुर

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 280236

प्रथम संस्करण	शरदपूर्णिमा	मूल्य
2200 प्रतियाँ	10 अक्टूबर 2003	10/-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी वर्तमान में जनमानस के लिए चिरपरिचित व्यक्तित्व हैं जो नारीजगत के लिए ही नहीं प्रत्युत् समस्त साधुवर्ग तथा विद्वानों के लिए भी ज्ञानक्षेत्र में आज एक चुनौती बन गई हैं। उन्होंने जहाँ एक ओर बालकवर्ग के लिए बालविकास जैसे सरलतम लघु पुस्तकों की रचना की वहीं विद्वानों के लिए क्लिष्टतम अनेक महान ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद किया है। जहाँ उन्होंने अनेकों विधानों की रचना कर भक्तिगंगा का स्रोत प्रवाहित किया वहीं षट्खण्डागम जैसे महान सिद्धान्तग्रंथ की संस्कृत टीका कर रही हैं। जहां उन्होंने राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों द्वारा जैनधर्म की कीर्तिपताका को दिग्दिगन्त फहराया वहीं चौबीसों तीर्थंकरों की जन्मभूमियों के विकास, संरक्षण व संवर्द्धन का बिगुल बजाया है। इन सभी कार्यों के मध्य उन्होंने अपनी आगमोक्त चर्या का निराबाध पालन किया जो कि वर्तमान साधुवर्ग के लिए अनुकरणीय उदाहरण है। उनके इस व्यक्तित्व एवं कृतित्व के प्रति यह विश्व युगों-युगों तक चिरऋणी रहेगा।

उन्हीं पूज्य माताजी के श्रीचरणों में अपनी भक्ति सुमनावली प्रकट करते हुए संघस्थ पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने पूज्य माताजी का परिचय देते हुए उनके जीवन पर आधारित प्रश्नोत्तरी की रचना की है। साथ ही पूजा के माध्यम से उनका गुणानुवाद करते हुए ज्ञानमती वैराग्य भावना की भी रचना की है जिसे पढ़कर निश्चित ही भौतिक सुखाभिलाषी मनुष्य कुछ क्षण को स्वयं में वैराग्य भाव को प्रस्फुटित हुआ पायेगा।

आर्यिका श्री चंदनामती माताजी सिद्धहस्त लेखिका हैं। उनके द्वारा अब तक अनेकों पुस्तकों का लेखन हुआ है जिससे समाज में न सिर्फ जागृति ही आयी है अपितु लोगों ने सरल भाषा में जैनधर्म के वास्तविक स्वरूप को समझा है। इसी क्रम में उनके द्वारा लिखित इस पुस्तिका के द्वारा भी आप सब गुरुभक्ति करते हुए पूज्य माताजी के पदचिन्हों पर चलकर अपने जीवन का कल्याण करें। यही मंगल भावना है।

प्रस्तावना

-ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

इस संसार में गुरु परम आदरणीय माने गये हैं, उनकी भक्ति द्वारा भक्त संसाररूपी विकराल समुद्र को पार कर लेता है इसके एक नहीं अनेकों उदाहरण शास्त्र-पुराणों में वर्णित हैं जिनको पढ़कर मात्र रोमांच ही नहीं होता अपितु गुरुभक्ति की प्रेरणा भी मिलती है।

परम आदरणीय उन्हीं गुरुओं की श्रृंखला में बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती श्री शान्तिसागर जी महाराज की शिष्या बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी सर्वप्राचीन एवं परम विदुषी आर्यिका हैं जिनकी ज्ञान गरिमा का प्रत्येक विद्वान लोहा मानते हैं। युगानुयुग तक चिरस्मरणीय एवं वन्दनीय अनुपम निधियों को प्रदान करने वाली उन्हीं सरस्वती माता सम पूज्य गणिनीश्री की भक्ति में उनकी संघस्थ शिष्या परमपूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिकाश्री चंदनामती माताजी ने गद्य एवं पद्य दोनों शैलियों में विभिन्न कृतियों की रचना कर समय-समय पर जनमानस को पूज्य माताजी के जीवन से परिचित करवाकर सभी पर अनन्य उपकार किया है एवं पाठकगणों को गुरुभक्ति का एक सशक्त माध्यम प्रदान किया है। प्रस्तुत पुस्तिका ''गणिनी ज्ञानमती परिचय एवं प्रश्नोत्तरी'' उसी क्रमबद्ध श्रृंखला की अगली कड़ी है जिसमें पूज्य माताजी ने पूज्य गणिनीश्री के 69 वर्ष के जीवन परिचय को सरल एवं स्पष्ट भाषा में ''गागर में सागर'' के समान सभी के समक्ष प्रस्तुत किया है। उसके पश्चात् उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रश्नोत्तरी के माध्यम से पाठकों को हृदयंगम कराने का अनूठा प्रयास किया है।

साथ ही पूज्य माताजी की सुन्दर पूजन एवं ज्ञानमती वैराग्य भावना की रचना कर भक्तगणों को भक्ति करने का एवं उनके जीवन से शिक्षा ग्रहण कर निज में उतारने का सर्वोत्कृष्ट अवसर भी प्रदान किया है। पूज्य माताजी की लेखनी मात्र चलती नहीं अपितु बोलती है और लोगों में ज्ञान, भक्ति, श्रद्धा का संचार करने के साथ जीवन को उन्नत बनाने हतु नूतन दिशा भी दिखाती है। अर्जुन के समान एकमात्र गुरुभक्ति को ही अपना केन्द्रबिन्दु बनाने वाली पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी के द्वारा रचित भक्तिगंगा प्रवाहिनी इस पुस्तिका के माध्यम से आप सब भी गुरुभक्ति कर संसार समुद्र को पार करने में सक्षम होवें यही इस पुस्तक की सार्थकता है।

नहीं लेखनी लिख सकती है, माता की स्वर्णिम गाथा

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जैनशासन के वर्तमान व्योम पर छिटके नक्षत्रों में दैदीप्यमान सूर्य की भाँति अपनी प्रकाश-रश्मियों को प्रकीर्णित कर रही पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर उठी लेखनी की अपूर्णता यद्यपि अवश्यंभावी है, तथापि आत्मकल्याण की भावना से पूज्य माताजी के श्रीचरणों में उनके त्यागमयी जीवन के पचास स्वर्णिम वर्षों की पूर्णता पर विनम्र विनयांजलि रूप मेरा यह विनीत प्रयास है।

१. जन्म, वैराग्य और दीक्षा —

२२ अक्टूबर सन् १९३४, शरदपूर्णिमा के दिन टिकैतनगर ग्राम (जि. बाराबंकी, उ.प्र.) के श्रेष्ठी श्री छोटेलाल जैन की धर्मपत्नी श्रीमती मोहिनी देवी के दांपत्य जीवन के प्रथम पुष्प के रूप में "मैना" का जन्म परिवार में नवीन खुशियाँ लेकर आया था। माँ को दहेज में प्राप्त 'पद्मनंदिपंचविंशतिका' ग्रन्थ के नियमित स्वाध्याय एवं पूर्वजन्म से प्राप्त दृढ़ वैराग्य संस्कारों के बल पर मात्र १८ वर्ष की अल्प आयु में ही शरद पूर्णिमा के दिन मैना ने आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से सन् १९५२ में आजन्म ब्रह्मचर्यव्रतरूप सप्तम प्रतिमा एवं गृह त्याग के नियमों को धारण कर लिया। जैनेश्वरी दीक्षा की कामना को अपनी हर साँस में संजोये ब्र. मैना सन् १९५३ में आचार्य श्री देशभूषण जी से ही चैत्र कृष्णा एकम् को श्री महावीरजी अतिशय क्षेत्र में 'क्षुल्लिका वीरमती' के रूप में दीक्षित हो गईं। सन् १९५५ में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की समाधि के समय कुंथलगिरी पर एक माह तक प्राप्त उनके सान्निध्य एवं आज्ञा द्वारा 'क्षुल्लिका वीरमती' जी ने आचार्य श्री के प्रथम पट्टाचार्य शिष्य-वीरसागर जी महाराज से सन् १९५६ में 'वैशाख कृष्णा दूज' को माधोराजपुरा (राज.) में आर्यिका दीक्षा धारण करके "आर्यिका ज्ञानमती" नाम प्राप्त किया।

२. अध्ययन और अध्यापन —

ज्ञानप्राप्ति की पिपासा माता ज्ञानमती जी के रोम-रोम में प्रारंभ से ही कूट-कूट कर भरी थी। दीक्षा लेते ही स्वाध्याय-मनन-चिंतन की धारा में ही उन्होंने स्वयं को निबद्ध कर लिया। ज्ञान प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ स्रोत बना-संघस्थ मुनियों, आर्यिकाओं एवं संघस्थ शिष्य-शिष्याओं को जैनागम का तलस्पर्शी अध्यापन। 'कातंत्र रूपमाला' रुपी बीज से पूज्य माताजी की ज्ञानसाधना रूप वृक्ष प्रस्फुटित हुआ, जिस पर जो पत्ते, फूल-फल इत्यादि लगे, उन्होंने समस्त संसार को सुवासित कर दिया। गोम्मटसार, परीक्षामुख, न्यायदीपिका, प्रमेयकमलमार्तण्ड, अष्टसहस्री, तत्त्वार्थराजवार्तिक, सर्वार्थसिद्धि, अनगारधर्मामृत, मूलाचार, त्रिलोकसार आदि अनेक ग्रंथों को अपनी शिष्याओं और संघस्थ साधुओं को पढ़ा-पढ़ाकर आपने अल्प समय में ही विस्तृत ज्ञानार्जन कर लिया। हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, मराठी इत्यादि भाषाओं पर आपका पूर्ण अधिकार हो गया।

३. लेखनी का प्रारंभीकरण संस्कृत भाषा से —

भगवान महावीर के पश्चात् २५०० वर्ष के जिस इतिहास में जैन साध्वियों के द्वारा शास्त्र लेखन की कोई मिसाल दृष्टिगोचर नहीं होती थी, वह इतिहास जागृत हो उठा जब क्षुल्लिका वीरमती जी ने सन् १९५४ में सहस्त्रनाम के १००८ मंत्रों से अपनी लेखनी का प्रारंभ किया। यही मंत्र सरस्वती माता का वरदहस्त बनकर पूज्य माताजी की लेखनी को ऊँचाइयों की सीमा तक ले गये। सन् १९६९-७० में न्याय के सर्वोच्च ग्रंथ 'अष्टसहस्री' के हिन्दी अनुवाद ने उनकी अद्वितीय विद्वत्ता को संसार के सामने उजागर कर दिया। कितने ही ग्रंथों की संस्कृत टीका, कितनी ही टीकाओं के हिंदी अनुवाद, संस्कृत एवं हिन्दी में अनेक मौलिक ग्रंथों की रचना मिलकर आज २५०की संख्या को पार कर चुके हैं। पूज्य माताजी द्वारा लिखित समयसार, नियमसार इत्यादि की हिन्दी-संस्कृत टीकाएँ, जैनभारती, ज्ञानामृत, कातंत्र व्याकरण, त्रिलोक भास्कर, प्रवचन निर्देशिका इत्यादि स्वाध्याय ग्रंथ, प्रतिज्ञा, संस्कार, भक्ति, आदिब्रह्मा, आटे का मुर्गा, जीवनदान इत्यादि जैन उपन्यास, द्रव्यसंग्रह-रत्नकरण्डश्रावकाचार इत्यादि के हिन्दी पद्यानुवाद व अर्थ, बाल विकास-बालभारती, नारी आलोक आदि का

अध्ययन किसी को भी वर्तमान में उपलब्ध जैन वाङ्मय की विविध विधाओं का विस्तृत ज्ञान कराने में सक्षम है।

अध्यात्म, व्याकरण, न्याय, सिद्धांत, बाल साहित्य, उपन्यास चारों अनुयोगों रूप विविध विधाओं के अतिरिक्त पूज्य माताजी की लेखनी से विपुल भक्ति साहित्य उद्भूत हुआ है। इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीन लोक, सिद्धचक्र, विश्वशांति महावीर विधान इत्यादि भक्ति विधानों ने देश के कोने-कोने में जिनेन्द्र भक्ति की जो धारा प्रवाहित की है, वह अतुलनीय है।

धन्य हैं ऐसी महान प्रतिभावान् सरस्वती माता!

४. *सिद्धांत चक्रेश्वरी —*

वर्तमान में पू. माताजी जैनशासन के सर्वप्रथम सिद्धांत ग्रंथ 'षट्खण्डागम' के सूत्रों की संस्कृत टीका 'सिद्धांत चिंतामणि' के लेखन में संलग्न हैं। १० पुस्तकों की टीका वह लिख चुकी हैं, जिसमें से प्रथम पुस्तक हिन्दी टीका सहित प्रकाशित भी हो चुकी है। ११वीं पुस्तक की टीका का लेखन जारी है। आज से लगभग १००० वर्ष पूर्व आचार्य श्री नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती ने जिस प्रकार छह खण्ड रूप द्वादशांग रूप जिनवाणी को परिपूर्ण आत्मसात करके सार रूप में द्रव्य संग्रह, गोम्मटसार, लब्धिसार इत्यादि ग्रंथ अपनी लेखनी से प्रसवित किये थे, उसी प्रकार इस बीसवीं सदी की माता ज्ञानमती जी ने समस्त उपलब्ध जैनागम का गहन अध्ययन-मनन-चिंतन करके इस सिद्धांतचिंतामणि रूप संस्कृत टीका लेखन के महत्तम कार्य से 'सिद्धांत चक्रेश्वरी' के पद को साकार कर दिया है। १००० वर्ष पूर्व आचार्य श्री वीरसेन स्वामी द्वारा लिखित 'धवलाटीका' के पश्चात् इस महान ग्रंथ की सरल टीका लेखन का कार्य प्रथम बार हो रहा है।

५. *शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर —*

जैन सिद्धातों का मर्म विद्वत वर्ग समझ सके, इस भावना से कितने ही शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन पूज्य माताजी की प्रेरणास्वरूप किया गया। सन् १९६९ में जयपुर चातुर्मास के मध्य 'जैन ज्योतिर्लोक' पर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें पूज्य माताजी द्वारा 'जैन भूगोल एवं खगोल' का विशेष ज्ञान-

विद्वतवर्ग को कराया गया। अक्टूबर सन् १९७८ में हस्तिनापुर में पं. मक्खनलाल जी शास्त्री, पं. मोतीचंद जी कोठारी, डा. लाल बहादुर शास्त्री सहित जैन समाज के उच्चकोटि के लगभग १०० विद्वानों का विद्वत प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें पूज्य माताजी ने विद्वत्समुदाय को यथेष्ट मार्गदर्शन प्रदान किया। समय-समय पर आज तक यह श्रृंखला चल रही है।

६. *राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार —*

सन् १९८५ में 'जैन गणित एवं त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में सम्पन्न हुआ। पुनः अनेक संगोष्ठियां सम्पन्न होती रहीं और सन् १९९८ में 'भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन' के भव्य आयोजन द्वारा देशभर के विश्वविद्यालयों से पधारे कुलपतियों को भगवान ऋषभदेव को भारतीय संस्कृति एवं जैनधर्म के वर्तमानयुगीन प्रणेता पुरुष के रूप में जानने का अवसर प्राप्त हुआ। ११ जून २००० को 'जैनधर्म की प्राचीनता' विषय पर आयोजित इतिहासकारों के सम्मेलन द्वारा पाठ्य पुस्तकों में जैनधर्म संबंधी भ्रांतियों के सुधार के लिए विशेष दिशा-निर्देश 'राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद' (NCERT) तक पहुंचाये गये। इनके अतिरिक्त अनेक अन्य सेमिनार भी समय-समय पर सम्पन्न हुए हैं, जिनके प्रतिफल में देश के समक्ष समय-समय पर साहित्यिक कृतियाँ प्रस्तुत हो चुकी हैं।

७. *विश्वविद्यालय भी गौरवान्वित हुआ —*

मात्र कक्षा-तीन तक के लौकिक अध्ययन को प्राप्त विदुषी माता जी ने अध्ययन, अध्यापन, साहित्य निर्माण की जिन ऊँचाइयों को स्पर्श किया, उस अगाध विद्वता के सम्मान हेतु अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद द्वारा ५ फरवरी १९९५ को डी.लिट्. की मानद् उपाधि से पूज्य माताजी को सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया गया।

८. *इतिहास भी परिवर्तन के लिए बाध्य हुआ —*

सन् १९९२ से पूज्य माताजी की दृष्टि आधुनिक शिक्षाजगत में पढ़ायी जाने वाली पाठ्य पुस्तकों में जैनधर्म संबंधी भ्रान्त विषय वस्तु पर गयी तो

'भगवान महावीर जैनधर्म के संस्थापक हैं' इत्यादि भ्रांतियों को वहाँ देखकर उनका हृदय अत्यंत उद्वेलित हो उठा। फलस्वरूप प्रधानमंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्री, निदेशक-NCERT इत्यादि से उनकी प्रत्यक्ष वार्ता द्वारा शिक्षाजगत तक यह संदेश पहुंचा और दस वर्षों के अथक प्रयास द्वारा पाठ्य पुस्तकों में संशोधन का क्रम प्रारंभ हो सका और वर्तमान मेंNCERT जैनधर्म संबंधी सही तथ्यों से युक्त राष्ट्रीय पाठ्य पुस्तक तैयार करने में संलग्न है, यह बड़े ही गौरव की बात है। यथासंभव संशोधन होते ही संपूर्ण जैनसमाज की ओर से केन्द्र सरकार का स्वागत होना चाहिए।

९. तीर्थ विकास की भावना—

तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियों एवं विशेष रूप से जन्मभूमियों के विकास की ओर पूज्य माताजी की विशेष आंतरिक रुचि सदा से रही है। पूज्य माताजी का कहना हैं कि हमारी संस्कृति का परिचय प्रदान करने वाली ये कल्याणक भूमियाँ हमारी महान संस्कृति की धरोहर हैं, अतः इनका संरक्षण-संवर्धन-विकास अत्यंत आवश्यक है।

सर्वप्रथम भगवान शांतिनाथ, कुन्थुनाथ, अरहनाथ की जन्मभूमि 'हस्तिनापुर' में पूज्य माताजी की प्रेरणा से निर्मित जैन भूगोल की अद्वितीय रचना 'जम्बूद्वीप' आज विश्व के मानस पटल पर अंकित हो गयी है, उ.प्र. सरकार के पर्यटन विभाग ने जम्बूद्वीप से हस्तिनापुर की पहचान बताते हुए उसे एक अतुलनीय 'मानव निर्मित स्वर्ग'(A Man Made Heaven of Unparallel Superlatives And Natural Wonders) की संज्ञा प्रदान की है। सन् १९९३ से ९५ तक शाश्वत जन्मभूमि 'अयोध्या' में 'समवसरण मंदिर' और 'त्रिकाल चौबीसी मंदिर' का निर्माण करवाकर उसका विश्वव्यापी प्रचार, अकलूज (महाराष्ट्र) में नवदेवता मंदिर निर्माण की प्रेरणा, सनावद (म.प्र.) में णमोकार धाम, प्रीत विहार-दिल्ली में कमल मंदिर, मांगीतुंगी (महाराष्ट्र) में सहस्रकूट कमल मंदिर, अहिच्छत्र में ग्यारह शिखर वाला तीस चौबीसी मंदिर और भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि-प्रयाग में 'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली' का भव्य निर्माण पूज्य माताजी की ही प्रेरणा के सुफल हैं। कितने ही अन्य स्थानों पर भी अनेकानेक निर्माण पूज्य माताजी के

निर्देशन द्वारा सम्पन्न हुए और हो रहे हैं। वर्तमान में भगवान महावीर स्वामी की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) के विकास हेतु भगवान महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ, त्रिकाल चौबीसी मंदिर, नंद्यावर्त महल सहित भगवान महावीर के विशाल खड्गासन प्रतिमा की स्थापना आदि अनेक निर्माणआपकी प्रेरणा से इस क्षेत्र पर किये जा रहे हैं तथा ७ से १२ फरवरी २००३ तक भव्य 'पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महाकुम्भमस्तकाभिषेक' कार्यक्रम वहां सम्पन्नहुआ।

१०. विश्व में अनोखी १०८ फुट मूर्ति निर्माण की प्रेरणा —

विश्व के अप्रतिम आश्चर्य के रूप में १०८ फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की खड्गासन प्रतिमा के निर्माण का कार्य मांगीतुंगी (महा.) के पर्वत पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से प्रारंभ हो चुका है। युगों-युगों तक जिनशासन की महिमा को विकसित करने वाली यह प्रतिमा जैन संस्कृति के विशाल व्यक्तित्व का परिचय भी जनमानस को प्रदान करेगी।

११. शिरडी(महाराष्ट्र) में ज्ञानतीर्थ —

शिरडी (महाराष्ट्र) को जैन संस्कृति केन्द्र के रूप में स्थापित करने हेतु महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओं द्वारा वहाँ पर 'ज्ञानतीर्थ' के निर्माण की योजना मूर्त रूप ले रही है, जिसमें 'नवग्रह शांति मंदिर' का विशेष निर्माण पूज्य माताजी के निर्देशानुसार सम्पन्न किया जायेगा।

१२. धर्मप्रभावना के विविध आयाम —

जम्बूद्वीप रचना के निर्माण का प्रमुख लक्ष्य लेकर 'दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान' नामक संस्था का राजधानी दिल्ली में पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् १९७२ में गठन किया गया। इसी संस्थान ने विविध धर्मप्रभावना के कार्यों का निष्पादन किया है। संस्थान स्थित 'वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला' द्वारा लाखों की संख्या में ग्रंथ प्रकाशन, चारों अनुयोगों के ज्ञान से समन्वित 'सम्यग्ज्ञान' मासिक पत्रिका का प्रकाशन, णमोकार महामंत्र बैंक इत्यादि कितनी ही कार्ययोजनाएँ जिनशासन की कीर्ति को निरंतर प्रसारित कर रही हैं।

पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् १९८२ में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा राजधानी दिल्ली में उद्घाटित 'जम्बूद्वीप ज्ञान

ज्योति' ने तीन वर्ष तक सम्पूर्ण भारतवर्ष में जैनधर्म के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार किया और अंत में यह ज्योति अखण्ड रूप से तत्कालीन केन्द्रीय रक्षामंत्री-श्री पी.वी. नरसिंहाराव द्वारा जम्बूद्वीप स्थल पर स्थापित कर दी गयी। इसी प्रकार अप्रैल सन् १९९८ में प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 'भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार' का राजधानी दिल्ली से प्रवर्तन किया, जो समस्त प्रांतों में प्रवर्तन के पश्चात् आगामी शरद पूर्णिमा, २१ अक्टूबर २००२ को तपस्थली-प्रयाग तीर्थ पर निर्मित 'केवलज्ञान कल्याणक मंदिर' में स्थापित होकर युगों-युगों तक भगवान ऋषभदेव के वास्तविक समवसरण की याद दिलाता रहेगा।

जैनधर्म की प्राचीनता तथा भगवान ऋषभदेव के नाम एवं सिद्धांतों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए पूज्य माताजी ने राजधानी दिल्ली में विशाल 'चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान' आयोजित कराया, साथ ही 'भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती वर्ष' तथा 'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष (प्रधानमंत्री श्री अटल जी द्वारा उद्घाटित) भी उनकी प्रेरणा द्वारा विविध धर्मप्रभावना के कार्यक्रमों सहित सम्पन्न हुए। आस्था चैनल एवं जैन टी.वी द्वारा पूज्य माताजी के 'तीर्थंकर जीवन दर्शन (सचित्र)' एवं अन्य विषयों पर प्रभावक प्रवचन लम्बे समय तक प्रसारित किये गये एवं किये जा रहे हैं। पूज्य माताजी की प्रेरणा से स्थापित 'अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला संगठन' अपनी सैकड़ों ईकाइयों द्वारा दिगम्बर जैन समाज की नारी शक्ति को सृजनात्मक कार्यों हेतु संगठित किये हुए है।

इसके अतिरिक्त कितने ही अन्य धर्मप्रभावना के कार्य इन ५० वर्षों में पूज्य माताजी ने सम्पन्न किये हैं जिनका यहाँ लेखन तो संभव नहीं है, किन्तु आज पूरा समाज उनके कार्यकलापों से परिचित होकर उन्हें कर्मठता की मूर्ति के रूप में पहचानता है।

१३. संघर्ष विजेत्री—

पूज्य माताजी ने प्रारंभ से अपना प्रमुख लक्ष्य बनाया- प्रत्येक कार्य आगमानुकूल ही करना। पुनः उन कार्यों के निष्पादन में जो भी विघ्न आते हैं, उन्हें बहुत ही शांतिपूर्वक झेलकर पूरी तन्मयता के साथ उस कार्य को

परिपूर्ण करना उनकी विशेषता रही है। उनका पूरा जीवन आर्ष परम्परा का संरक्षण करते हुए अपने मूलगुणों में बाधा न आने देकर जिनधर्म की अधिकाधिक प्रभावना के साथ व्यतीत हुआ है। किसी भी संस्था, तीर्थ, चंदे आदि की दानराशि को अपनी संघ व्यवस्था में समाहित न करने का उनका नियम है। ५० वर्षों से इस नियम का पालन करते हुए अपने कर्तव्य पथ पर वे अडिग हैं। यही कारण है कि उन्हें लम्बी-लम्बी यात्राएं कराने में अपना कर्तव्यपालन करने वाले संघपति श्रावक भी अपना सौभाग्य समझते हैं।

१४. अमृतमय हों वर्ष तुम्हारे —

जिनकी दीर्घकालिक तपस्या के वर्षों की गिनती जानकर अनेक आचार्य, मुनि, आर्यिकाएँ इत्यादि भी इस बात को कहते हुए गौरव का अनुभव करते हैं कि आज जितनी मेरी उम्र भी नहीं है उससे अधिक तो पूज्य माताजी की दीक्ष आयु है, अर्थात् १८ वर्ष की उम्र से त्याग मार्ग पर जिन्होंने कदम रखा, उन्होंने अपनी जन्मतिथि-शरदपूर्णिमा को भी त्याग से सार्थक कर लिया। यही कारण है कि २१ अक्टूबर २००२ की शरदपूर्णिमा 'स्वर्णिम शरद पूर्णिमा' बनकर आई जब आपने अपने त्यागमयी जीवन के ५० वर्ष पूर्णकिये। पुनः सौभाग्य उदित हुआ सदियों से पूज्य भगवान महावीर की जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) का, जहाँ वर्ष २००३ में पूज्य माताजी (ससंघ) के स्वर्णिम (५१वाँ) चातुर्मास के अंतर्गत उनका ७०वाँ जन्मजयंती दिवस ८ से १० अक्टूबर तक ''कुण्डलपुर महोत्सव'' के मध्य मनाया जा रहा है। पर्यटन विभाग-बिहार सरकार एवं कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ''कुण्डलपुर महोत्सव'' की इस ऐतिहासिक श्रृंखला का शुभारंभ पूज्य माताजी के विराट व्यक्तित्व का ही प्रतिबिम्ब है।

ऐसी चतुर्मखी प्रतिभा की धनी पूज्य माताजी के चरणों में भावभीनी विनयांजलि है तथा भगवान जिनेन्द्र से यही प्रार्थना है कि उनके इस पवित्र त्यागमयी जीवन का हमें अमृत महोत्सव भी मनाने का लाभ प्राप्त हो तथा आपके द्वारा इसी प्रकार से नया-नया साहित्य जनता को प्राप्त होता रहे, यही मंगलकामना है।

प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १ —बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका कौन-सी हैं?

उत्तर —गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी।

प्रश्न २ — इनका जन्म कहाँ हुआ है?

उत्तर — इनका जन्म उत्तर प्रदेश में बाराबंकी जिले के टिकैतनगर ग्राम में हुआ।

प्रश्न ३ — गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का जन्म किस सन् में हुआ?

उत्तर — गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का जन्म २२ अक्टूबर सन् १९३४ में हुआ।

प्रश्न ४ — गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का जन्म किस तिथि में हुआ?

उत्तर —गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का जन्म शरदपूर्णिमा (आश्विन शु. पूर्णिमा) की पावन तिथि में हुआ।

प्रश्न ५ —इनका जन्म नाम क्या था?

उत्तर —कु. मैना।

प्रश्न ६ —इनकी जाति एवं गोत्र का क्या नाम था?

उत्तर —अग्रवाल जैन जाति एवं गोयल गोत्रीय परिवार में इनका जन्म हुआ था।

प्रश्न ७ —इनके माता-पिता का क्या नाम था?

उत्तर —माता का नाम मोहिनी देवी तथा पिता का नाम छोटेलाल था।

प्रश्न ८ —अपने माता-पिता की ये कौन सी संतान हैं ?

उत्तर —प्रथम।

प्रश्न ९ —इनके भाई कितने हैं?

उत्तर —चार भाई हैं-कैलाशचंद, प्रकाशचंद, सुभाषचंद एवं ब्र. रवीन्द्र कुमार जी।

प्रश्न १० —बहनें कितनी हैं?

उत्तर —९ बहने हैं-स्वयं, सौ. शान्ति देवी, सौ. श्रीमती देवी, ब्र. मनोवती (आर्यिका अभयमती), श्रीमती कुमुदनी देवी, सौ. मालती शास्त्री, सौ. कामनी देवी, ब्र. माधुरी (आ. चन्दनामती), सौ. त्रिशला देवी।

प्रश्न ११ —पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ने कितने वर्ष की उम्र में अणुव्रत धारण किये थे?

उत्तर —यूं तो आठ वर्ष की उम्र के बाद ही इन्हें पूर्व जन्म के संस्कारवश बोध प्राप्त हो गया था, जिसके फलस्वरूप इन्होंने अपने घर में अनेक कुरीतियों को समाप्त किया था। फिर भी विधिवत् गुरु के पादमूल में सन् १९५२ की शरदपूर्णिमा को सप्तमप्रतिमा के व्रत लेकर अणुव्रती श्राविका की श्रेणी प्राप्त की थी।

प्रश्न १२ —गणिनी ज्ञानमती माताजी की ननिहाल कहाँ हैं?

उत्तर —गणिनी ज्ञानमती माताजी की ननिहाल महमूदाबाद (उ.प्र.) में है।

प्रश्न १३ —गणिनी ज्ञानमती माताजी को वैराग्य कैसे हुआ?

उत्तर — 'पद्मनन्दिपंचविंशतिका' ग्रंथ के स्वाध्याय से इन्हें वैराग्य हुआ था।

प्रश्न १४ —इन्हें ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कराने में कौन सा कारण प्रमुख रहा?

उत्तर —एक बार अकलंक-निकलंक नाटक देखकर इन्होंने आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत लेने का संकल्प किया।

प्रश्न १५ —इनका विवाह हुआ था या क्वांरी अवस्था में वैराग्य हो गया था?

उत्तर —क्वांरी अवस्था में ही इन्हें संसार से वैराग्य हो गया था।

प्रश्न १६ —ब्रह्मचर्य व्रत इन्होंने कहाँ और किस गुरु से लिया था?

उत्तर —इन्होंने सन् १९५२ की शरद पूर्णिमा को बाराबंकी में आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से सप्तम प्रतिमा रूप ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया था।

प्रश्न १७ —इन्होंने कितनी उम्र में दीक्षा ग्रहण की?

उत्तर —इन्होंने १८ वर्ष की उम्र में दीक्षा ग्रहण की।

प्रश्न १८ — इन्होंने क्षुल्लिका दीक्षा कहाँ ली थी?

उत्तर — श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र पर इन्होंने क्षुल्लिका दीक्षा ली थी।

प्रश्न १९ — इन्होंने क्षुल्लिका दीक्षा कौन से सन् में व कौन सी तिथि में ली थी?

उत्तर — इन्होंने क्षुल्लिका दीक्षा सन् १९५३ में चैत्र कृ. एकम को ली थी।

प्रश्न २० — इन्होंने क्षुल्लिका दीक्षा किससे ली थी?

उत्तर — इन्होंने क्षुल्लिका दीक्षा परमपूज्य आचार्य श्री देशभूषण महाराज से ली थी।

प्रश्न २१ — क्षुल्लिका अवस्था में इनका क्या नाम था?

उत्तर — क्षुल्लिका वीरमती माताजी।

प्रश्न २२ — क्षुल्लिका अवस्था में ये कितने दिन रही हैं?

उत्तर — ३ वर्ष ३१ दिन तक ये क्षुल्लिका अवस्था में रही हैं।

प्रश्न २३ — क्षुल्लिका अवस्था के तीन चातुर्मास इन्होंने कहाँ-कहाँ किये थे?

उत्तर — प्रथम टिकैतनगर में, द्वितीय जयपुर में और तृतीय म्हसवड़ (महाराष्ट्र) में।

प्रश्न २४ — पुनः इन्होंने आर्यिका दीक्षा किससे ग्रहण की?

उत्तर — चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज से इन्होंने आर्यिका दीक्षा ली थी।

प्रश्न २५ — कहाँ और किस तिथि में आर्यिका दीक्षा हुई?

उत्तर — माधोराजपुरा (राज.) में सन् १९५६ में वैशाख कृष्णा दूज को आचार्य श्री वीरसागरजी महाराज ने इन्हें आर्यिका दीक्षा देकर ज्ञानमती नाम प्रदान किया था।

प्रश्न २६ — आर्यिका दीक्षा के बाद इनके ४८ चातुर्मास कहाँ-कहाँ हुए हैं?

उत्तर — १. जयपुर (खानिया) २. जयपुर (खानिया) ३. ब्यावर (राज.) ४. अजमेर ५. सुजानगढ़ (राज.) ६. सीकर ७. लाडनू ८. कलकत्ता ९. हैदराबाद १०. श्रवणबेलगोला ११. सोलापुर

(महा.) १२. सनावद १३. प्रतापगढ़ (राज.) १४. जयपुर १५. टोंक १६. अजमेर १७. पहाड़ीधीरज (दिल्ली) १८. नजफगढ़ (दिल्ली) १९. कूचा सेठ (दिल्ली) २०. हस्तिनापुर २१. खतौली २२. हस्तिनापुर २३. हस्तिनापुर २४. मोरीगेट (दिल्ली) २५.कूचासेठ (दिल्ली) २६. हस्तिनापुर (जम्बूद्वीप) २७. दिल्ली २८. से ३५ नं. तक अर्थात् सन् १९८३ से १९९० तक ८ चातुर्मास हस्तिनापुर में पुनः ३६. सरधना ३७. हस्तिनापुर ३८. अयोध्या ३९. टिकैतनगर ४०. हस्तिनापुर ४१. मांगीतुंगी ४२. दिल्ली (लाल मंदिर) ४३. हस्तिनापुर ४४. दिल्ली (कनॉट प्लेस) ४५. दिल्ली (कमल मंदिर-प्रीत विहार) ४६. दिल्ली (अशोक विहार) ४७. प्रयाग (इलाहाबाद) ४८. कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार)

प्रश्न २७ — चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम दर्शन इन्होंने कब और कहाँ किये थे?

उत्तर — दिसम्बर सन् १९५४ नीरा (महा.) में।

प्रश्न २८ — क्या इन्होंने आचार्य श्री शांतिसागर जी की सल्लेखना भी देखी है?

उत्तर — हाँ, सन् १९५५ में एक माह कुंथलगिरि रुककर क्षुल्लिकावस्था में आचार्य श्री की प्रत्यक्ष सल्लेखना तो देखी ही है, साथ ही उनके श्रीमुख से अनेक अनुभव वाक्य भी प्राप्त किए हैं।

प्रश्न २९ — आचार्य श्री शांतिसागर जी से इन्होंने आर्यिका दीक्षा क्यों नहीं ली?

उत्तर — इन्होंने आचार्य श्री से आर्यिका दीक्षा की याचना की थी किन्तु आचार्य श्री ने कहा था कि मैंने सल्लेखना ले ली है और अब दीक्षा देने का त्याग कर दिया है। तुम मेरे शिष्य वीरसागर से आर्यिका दीक्षा लेना। अतः उनकी आज्ञानुसार वीरसागर जी से दीक्षा ली।

प्रश्न ३० — आर्यिकाओं के कितने मूलगुण होते हैं?

उत्तर — आर्यिकाओं के २८ मूलगुण होते हैं क्योंकि उनकी समस्त चर्या,

प्रायश्चित, दीक्षाविधि आदि मुनियों के समान ही रहती है। हां नग्नता और खड़े होकर भोजन करना ये दो बातें उनके लिए निषिद्ध हैं अतः उनके स्थान पर एक सफेद साड़ी पहनने और बैठकर करपात्र में भोजन करने का विधान है जोकि उनके मूलगुण के रूप में स्वीकार किये गये हैं।

प्रश्न ३१ —ज्ञानमती माताजी को इतने विशाल ज्ञान की प्राप्ति कैसे हुई?

उत्तर —पूर्वजन्म के संस्कारवश एवं ज्ञानावरणकर्म का क्षयोपशम ही निमित्त मानना पड़ेगा तथा इस भव में जिनभक्ति और अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भी कारण है।

प्रश्न ३२ —वर्तमान शताब्दी में ग्रंथ रचना का शुभारंभ किसने किया है?

उत्तर —गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने।

प्रश्न ३३ —साहित्य सृजन में इनकी सबसे पहली कृति कौन सी है?

उत्तर —सन् १९५५ में म्हसवड़ (महा.) चातुर्मास में सबसे पहले जिनसहस्रनाममंत्र नाम की पुस्तक लिखी, वह इसी नाम से आज भी प्रकाशित है।

प्रश्न ३४ —श्री ज्ञानमती माताजी ने प्रथमानुयोग से संबंधित कौन-कौन सी पुस्तकें लिखी हैं?

उत्तर —प्रतिज्ञा, परीक्षा, संस्कार, उपकार, जीवनदान, प्रभावना, सती अंजना, भक्ति, भगवान नेमिनाथ, भगवान ऋषभदेव, आदिब्रह्मा, कामदेव बाहुबली, योगचक्रेश्वर बाहुबली, बाहुबली नाटक, पुरुदेव नाटक, रोहिणी नाटक, एकांकी, जैन बाल भारती, नारी आलोक, चौबीस तीर्थंकर, आटे का मुर्गा आदि।

प्रश्न ३५ —पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के प्रथमानुयोगमयी जीवन पक्ष से क्या निष्कर्ष निकलता है?

उत्तर —जीवन में दृढ़ संकल्पी होकर अपने लक्ष्य को पूर्ण करना, संघर्षों को झेलकर जीवन को कुन्दन सा चमकाना, न्याय का पक्ष एवं अन्याय से दूर रहना, सत्य को अपना कर आत्मविश्वास पूर्वक

उस पर अडिग रहना। यह पूज्य ज्ञानमती माताजी के आदर्श जीवन का प्रथमानुयोगमयी ग्रंथ पठनीय एवं अनुकरणीय है।

प्रश्न ३६ —पूज्य माताजी ने करणानुयोग से संबंधित कौन-कौन सी पुस्तकें लिखी हैं?

उत्तर —त्रिलोक भास्कर और जम्बूद्वीप ये पुस्तकें लिखी हैं तथा गोम्मटसार जीवकांडसार, गोम्मटसार कर्मकांडसार का संकलन किया है।

प्रश्न ३७ —ज्ञानमती माताजी ने संस्कृत टीका किन-किन ग्रंथों की लिखी है?

उत्तर —नियमसार ग्रंथ पर स्याद्वादचंद्रिका टीका एवं षट्खंडागम ग्रंथ (१६ पुस्तकों में से १२ पुस्तकों की हो चुकी है)पर सिद्धान्तचिंतामणि नामक संस्कृत टीका लिखी है।

प्रश्न ३८ —पूज्य माताजी ने अनेक विधानों की रचना की है उनमें से ५ के नाम बताइये?

उत्तर —इन्द्रध्वज विधान, कल्पद्रुम विधान, तीन लोक विधान, सर्वतोभद्र विधान, सिद्धचक्र विधान।

प्रश्न ३९ —इन्द्रध्वज विधान की रचना ज्ञानमती माताजी ने किस सन् में कहाँ की थी?

उत्तर —सन् १९७६ में खतौली उ.प्र. में इन्द्रध्वज विधान की रचना की थी।

प्रश्न ४० —इन्द्रध्वज विधान कितने दिनों में लिखकर पूर्ण हुआ था?

उत्तर —श्रावण वदी सप्तमी से इन्द्रध्वज विधान का लेखन पूज्य माताजी ने प्रारंभ किया था तथा कार्तिक कृष्णा अमावस को पूर्ण किया था। इस प्रकार कुल ९९ दिनों में इन्द्रध्वज विधान का लेखन पूर्ण हुआ था।

प्रश्न ४१ —इन्द्रध्वज विधान में कितनी पूजाएं एवं कितने अर्घ्य हैं?

उत्तर —५० पूजाएं एवं ४५८ अर्घ्य हैं।

प्रश्न ४२ —कल्पद्रुम मंडल विधान की रचना ज्ञानमती माताजी ने किस ग्रंथ के आधार से की है?

उत्तर —इस विधान का नाम शास्त्रों में आता था, किन्तु अभी तक यह विधान देश के किसी ग्रंथालय में देखने में नहीं आया था। पूज्य माताजी ने अपने मस्तिष्क से ही तिलोयपण्णत्ति आदि ग्रंथों का आधार लेकर समवसरण से संबंधित पूजाओं को रचकर यह अपनी एक मौलिक कृति बनाई है।

प्रश्न ४३ —इस कल्पद्रुम विधान को उन्होंने कहाँ और किस सन् में लिखा है?

उत्तर —सन् १९८६ में हस्तिनापुर के जंबूद्वीप स्थल पर चातुर्मास काल में।

प्रश्न ४४ —इस कल्पद्रुम विधान को माताजी ने कितने दिन में लिखकर पूरा किया था?

उत्तर —९ जुलाई १९८६ आषाढ़ शुक्ला द्वितीया को पूज्य माताजी ने प्रातः ५ बजकर ४५ मिनट पर इसका लेखन प्रारंभ किया तथा १७ अक्टूबर १९८६ शरदपूर्णिमा को प्रातः ६.१० बजे पूर्ण किया, अतः कुल १०१ दिन में यह विधान लिखा गया है।

प्रश्न ४५ —कल्पद्रुम विधान में कुल कितनी पूजाएं एवं कितने अर्घ्य हैं?

उत्तर —२४ पूजाएं एवं २४०० अर्घ्य हैं।

प्रश्न ४६ —मूलाचार ग्रंथ किसने बनाया और इसका हिन्दी अनुवाद किसने किया है?

उत्तर —मूलाचार ग्रंथ आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी ने बनाया और इसका हिन्दी अनुवाद युगप्रवर्तिका गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने किया है।

प्रश्न ४७ —आचार्य श्री कुन्दकुन्दस्वामी द्वारा रचित मूलाचार ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद ज्ञानमती माताजी ने कब किया है और वह कहाँ से प्रकाशित हुआ है?

उत्तर —सन् १९७६ में मूलाचार का अनुवाद किया है और वह भारतीय ज्ञानपीठ संस्था से प्रकाशित हुआ है।

प्रश्न ४८ —क्या पूज्य माताजी ने कन्नड़ भाषा में भी रचनाएँ की हैं?

उत्तर —हाँ, सन् १९६५ में माताजी ने कन्नड़ की बारह भावना, बाहुबली स्तुति और भद्रबाहु स्तुति रची थीं जिसमें से बारह भावना कर्नाटक प्रान्त में खूब प्रचलित है।

प्रश्न ४९ —पूज्य माताजी द्वारा रचित तीन लोक विधान में कितनी पूजा अर्घ्य आदि हैं?

उत्तर —तीन लोक विधान में ६४ पूजाएँ हैं। ८४४ अर्घ्य तथा १४० पूर्णार्घ्य हैं ६४ जयमाला एवं त्रैलोक्य चूड़ामणि नाम की १ बड़ी जयमाला है।

प्रश्न ५० —पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ने द्रव्यानुयोग संबंधी किन-किन ग्रंथों की रचना की है?

उत्तर —(१) समयसार की हिन्दी टीका (२) नियमसार की संस्कृत टीका (३) नियमसार पद्यावली (४) नियमसार पद्मप्रभमलधारी देव की संस्कृत टीका का हिन्दी अनुवाद।

प्रश्न ५१ —उनके द्वारा रचित संस्कृत टीका ग्रंथ का क्या नाम है?

उत्तर —नियमसारप्राभृत। आचार्य श्री कुन्दकुन्दस्वामी द्वारा रचित नियमसार की प्राकृत गाथाओं पर ''स्याद्वादचन्द्रिका'' नामक संस्कृत टीका एवं उसकी हिन्दी टीका भी लिखी है, जो अत्यन्त सरल एवं रोचक है।

प्रश्न ५२ —पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित उस अनुवादित ग्रंथ का नाम बताइये जिसे विद्वतवर्ग ''लोहे के चने चबाना'' जैसे उदाहरणों द्वारा क्लिष्ट बताते हैं?

उत्तर— उस ग्रंथ का नाम अष्टसहस्री ग्रंथ है जिसका हिन्दी अनुवाद सरल भाषा में पूज्य माताजी ने किया है।

प्रश्न ५३ —पूज्य माताजी द्वारा रचित चारों अनुयोगों से समन्वित ग्रंथ का नाम बताइये?

उत्तर —''जैन भारती'' ग्रंथ चारों अनुयोगों से समन्वित ग्रंथ है।

प्रश्न ५४ — गणिनी ज्ञानमती माताजी ने अब तक कितने ग्रंथों की रचना की है?

उत्तर — गणिनी ज्ञानमती माताजी ने अब तक २५० ग्रंथों की रचना की है।

प्रश्न ५५ — पूज्य माताजी के जीवन का प्रमुख उद्देश्य क्या रहा है?

उत्तर — आत्मकल्याण के साथ-साथ शिष्यों का संग्रह, साहित्य सृजन, २४ तीर्थंकरों की जन्मभूमि एवं पंचकल्याणक भूमियों का उद्धार एवं विकास।

प्रश्न ५६ — माताजी के मन में जंबूद्वीप रचना का ध्यान कब और कहाँ आया?

उत्तर — सन् १९६५ में जब ये अपने आर्यिका संघ सहित कर्नाटक प्रान्त के श्रवणबेलगोला तीर्थ पर चातुर्मास कर रही थीं, तब एक दिन भगवान बाहुबली के चरण सानिध्य में ध्यान करते हुए जम्बूद्वीप रचना एवं पूरे तेरह द्वीप का दर्शन हुआ था।

प्रश्न ५७ — यह जम्बूद्वीप रचना माताजी की कल्पना है या इसका शास्त्रीय प्रमाण भी है?

उत्तर — माताजी कभी भी कल्पनाओं या स्वप्नों को महत्व नहीं देती हैं। उनके ध्यान में स्वयमेव यह रचना दृष्टिगोचर हुई तब उन्होंने ग्रंथों में उसकी खोज की और फलस्वरूप तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार आदि ग्रंथों में इस रचना का ज्यों का त्यों वर्णन पाकर बहुत प्रसन्न हुईं। सारांश यह है कि जंबूद्वीप कोई काल्पनिक रचना नहीं है यह करणानुयोग ग्रंथों में भूमंडल की रचना है।

प्रश्न ५८ — बाहुबली के चरणों में प्राप्त जंबूद्वीप का निर्माण उत्तरप्रदेश में कहाँ हुआ?

उत्तर — हस्तिनापुर (जिला-मेरठ) में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण हुआ है।

प्रश्न ५९ — क्या हस्तिनापुर से जंबूद्वीप का कोई पौराणिक संबंध जुड़ा है?

उत्तर — हाँ, यह एक अनहोना संयोग ही जुड़ गया। जब इतिहास एवं पुराणों का अध्ययन किया गया तब ज्ञात हुआ कि आज से एक कोड़ाकोड़ी सागर वर्ष पूर्व भगवान ऋषभदेव के युग में हस्तिनापुर के राजा श्रेयांस ने स्वप्न में सुमेरु पर्वत देखा था। सो ऐसा लगता

है कि उनका स्वप्न ही आज उस भूमि पर साकार हुआ है।

प्रश्न ६० — हस्तिनापुर में जंबूद्वीप के निर्माण में ज्ञानमती माताजी का प्रमुख लक्ष्य क्या रहा?

उत्तर — संसार को जैन भूगोल का ज्ञान कराना तथा पृथ्वी पर हम कहाँ निवास करते हैं इस बात का बोध करवाना इनका प्रमुख लक्ष्य रहा है।

प्रश्न ६१ — जंबूद्वीप ज्ञानज्योति का प्रवर्तन इन्होंने क्यों करवाया था?

उत्तर — अहिंसा धर्म का व्यापक प्रचार, जंबूद्वीप का प्रचार तथा हस्तिनापुर में निर्मित होने वाले जंबूद्वीप के प्रति जन-जन की अपनत्व भावनाएं जोड़ने हेतु इन्होंने ४ जून १९८२ को दिल्ली से प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा ज्ञानज्योति का प्रवर्तन कराया था, जो कि अपने लक्ष्य में पूर्ण सफल सिद्ध हुई।

प्रश्न ६२ — उस ज्ञानज्योति की अखंड स्थापना कहाँ और कब हुई है?

उत्तर — हस्तिनापुर में जंबूद्वीप रचना के ठीक सामने २८ अप्रैल १९८५ को तत्कालीन केन्द्रीय रक्षामंत्री श्री पी.वी. नरसिंहराव ने ज्ञानज्योति की अखंड स्थापना की थी।

प्रश्न ६३ — अयोध्या के महामस्तकाभिषेक महोत्सव की योजना माताजी के मस्तिष्क में कब आई?

उत्तर — २३ अक्टूबर, १९९२ धनतेरस को जम्बूद्वीप रचना के समक्ष ध्यान करते हुए ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक की अन्तर्प्रेरणा प्राप्त हुई थी।

प्रश्न ६४ — पुनः हस्तिनापुर से अयोध्या की ओर इन्होंने कब विहार किया?

उत्तर — ११ फरवरी १९९३, फाल्गुन कृ. पंचमी को पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने संघ सहित अयोध्या की ओर मंगल विहार किया।

प्रश्न ६५ — माताजी अयोध्या कब पहुँची थीं?

उत्तर — १६ जून १९९३, आषाढ़ वदी ११ को वे अयोध्या पहुँचीं और

जीवन में प्रथम बार रायगंज परिसर में विराजमान भगवान श्री ऋषभदेव के दर्शन किये।

प्रश्न ६६ — अयोध्या में अब तक कौन-कौन से साधुओं के चातुर्मास हुए हैं?

उत्तर — इस शताब्दी में तो आज तक किसी साधु संघ का चातुर्मास अयोध्या के इतिहास में उल्लिखित नहीं है। सन् १९९३ में प्रथम बार पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का संघ सहित चातुर्मास हुआ है।

प्रश्न ६७ — उनके सानिध्य में अयोध्या की पावन वसुन्धरा पर कौन-कौन से नव निर्माण हुए हैं?

उत्तर — तीन चौबीसी मंदिर, समवसरण मंदिर, अनन्तनाथ टोंक पर १९ तीर्थंकर, सप्तऋषि और ब्राह्मी सुन्दरी के चरणचिन्ह, रायगंज मंदिर परिसर में शान्तिसागर निलय, देशभूषण निलय, ज्ञानमती निलय का निर्माण, आचार्य श्री शांतिसागर जी एवं देशभूषण महाराज की चरण छतरी, क्षेत्रपाल, पद्मावती, गोमुख यक्ष, चक्रेश्वरी देवी की वेदी, ५० से अधिक शिलालेख (अयोध्या के इतिहास से संबंधित), भरत बाहुबली के चरण, पांडुकशिला स्थल पर शांति, कुंथु, अरनाथ तीर्थंकर के चरण, राजकीय उद्यान में भगवान ऋषभदेव की मूर्ति स्थापना एवं उद्यान का "ऋषभदेव उद्यान" नामकरण, अवध विश्वविद्यालय में "ऋषभदेव जैन शोध पीठ" की स्थापना, ऋषभदेव नेत्र चिकित्सालय आदि नव निर्माण हुए हैं।

प्रश्न ६८ — अयोध्या में महामस्तकाभिषेक महोत्सव कब सम्पन्न हुआ है?

उत्तर — २४ फरवरी १९९४, माघ सुदी तेरस को।

प्रश्न ६९ — पूज्य गणिनी माताजी कितनी भाषाओं की ज्ञाता हैं?

उत्तर — पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, मराठी इत्यादि भाषाओं की ज्ञाता हैं।

प्रश्न ७० — पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से किस संस्था की स्थापना कहाँ हुई?

उत्तर — पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से "दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान" नामक संस्था की स्थापना राजधानी दिल्ली में हुई।

प्रश्न ७१ — यह संस्था किस सन् में स्थापित हुई?

उत्तर — यह संस्था सन् १९७२ में स्थापित हुई।

प्रश्न ७२ — इस संस्थान के अंतर्गत कौन सी ग्रंथमाला चलती है?

उत्तर — इस संस्थान के अंतर्गत 'वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला" चलती है।

प्रश्न ७३ — वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला द्वारा अब तक कितने ग्रंथों का प्रकाशन हुआ है?

उत्तर — वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला द्वारा अब तक २२५ पुस्तकों का लाखों की संख्या में प्रकाशन हुआ है।

प्रश्न ७४ — संस्थान द्वारा माताजी की प्रेरणा से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका कौन सी है?

उत्तर — संस्थान द्वारा माताजी की प्रेरणा से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'सम्यग्ज्ञान' है।

प्रश्न ७५ — 'सम्यग्ज्ञान' नामक मासिक पत्रिका का मूल उद्देश्य क्या है?

उत्तर — चारों अनुयोगों एवं आगमोक्त लेखों के माध्यम से घर बैठे स्वाध्याय के साथ-साथ आगम की वास्तविक जानकारी प्रदान करना।

प्रश्न ७६ — पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से हस्तिनापुर में कौन से बैंक की स्थापना हुई है?

उत्तर — "णमोकार महामंत्र बैंक" की स्थापना हुई है।

प्रश्न ७७ — णमोकार महामंत्र बैंक की स्थापना किस सन् और किस तिथि में हुई?

उत्तर — णमोकार महामंत्र बैंक की स्थापना ८ अक्टूबर १९९५ को शरदपूर्णिमा के दिन हुई।

प्रश्न ७८ — इसका प्रधान कार्यालय कहाँ हैं?

उत्तर — इसका प्रधान कार्यालय जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में है।

प्रश्न ७९ — जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में अन्य कितने मंदिर बने हुए हैं?

उत्तर — जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में निर्मित जिनमंदिरों के नाम इस प्रकार हैं- कमल मंदिर, ध्यान मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, भगवान वासुपूज्य मंदिर, सहस्त्रकूट जिनमंदिर, ॐ मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, भगवान ऋषभदेव मंदिर, कैलाशपर्वत, बीस तीर्थंकर मंदिर, मध्यलोक अकृत्रिम जिनमंदिर इत्यादि।

प्रश्न ८० — पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान ऋषभदेव की शिक्षाओं एवं जैनधर्म की प्राचीनता का दिग्दर्शन कराने हेतु कौन से रथ का भारत भ्रमण हेतु प्रवर्तन हुआ?

उत्तर — पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान ऋषभदेव की शिक्षाओं एवं जैनधर्म की प्राचीनता का दिग्दर्शन कराने हेतु "भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार" का राजधानी दिल्ली से भारत भ्रमण हेतु प्रवर्तन हुआ।

प्रश्न ८१ — किस सन् और किस तिथि में इसका प्रवर्तन हुआ?

उत्तर — ९ अप्रैल सन् १९९८ में भगवान महावीर जयंती के शुभ दिवस इसका प्रवर्तन हुआ।

प्रश्न ८२ — किनके द्वारा इस रथ का प्रवर्तन हुआ?

उत्तर — भारत के प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी द्वारा इस रथ का प्रवर्तन हुआ।

प्रश्न ८३ — समस्त प्रांतों में प्रवर्तन के पश्चात् इस समवसरण की स्थापना कहाँ हुई?

उत्तर — समस्त प्रांतों में प्रवर्तन के पश्चात् इस समवसरण की स्थापना २१ अक्टूबर २००२, शरदपूर्णिमा को ऋषभदेव की दीक्षा एवं ज्ञानकल्याणक भूमि तपस्थली-प्रयाग तीर्थ पर निर्मित केवलज्ञान कल्याणक मंदिर में हुई।

प्रश्न ८४ — पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने चौबीस कल्पद्रुम विधान का विराट आयोजन कहाँ करवाया?

उत्तर — पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने चौबीस कल्पद्रुम विधान का विराट आयोजन राजधानी दिल्ली के रिंगरोड मैदान में करवाया।

प्रश्न ८५ — उसका उद्घाटन किसने किया था?

उत्तर — उसका उद्घाटन पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने किया था।

प्रश्न ८६ — पूज्य माताजी के सानिध्य में ४ फरवरी २०००को कौन सा भव्य आयोजन हुआ?

उत्तर — "भगवान ऋषभदेव अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव" का भव्य आयोजन किया गया।

प्रश्न ८७ — इस आयोजन का उद्घाटन कहाँ हुआ?

उत्तर — राजधानी दिल्ली के लालकिला मैदान में हुआ।

प्रश्न ८८ — इस महोत्सव का उद्घाटन किनके द्वारा किया गया?

उत्तर — भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा।

प्रश्न ८९ — यह महोत्सव कब तक चला?

उत्तर — यह महोत्सव पूरे एक वर्ष तक भारत के विभिन्न प्रान्तों, नगरों एवं विदेशों में विविध कार्यक्रमों के माध्यम से मनाया गया।

प्रश्न ९० — इस महोत्सव के अंतर्गत कितनी संगोष्ठियाँ सम्पन्न हुईं?

उत्तर — लगभग १००८ संगोष्ठियाँ सम्पन्न हुईं।

प्रश्न ९१ — क्या इस महोत्सव में निर्वाण लाडू भी चढ़ाया गया?

उत्तर — हाँ, इस महोत्सव में १००८ निर्वाणलाडू चढ़ाए गए जिसमें प्रथम लाडू प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने चढ़ाया।

प्रश्न ९२ — विदेशों में इसका किस प्रकार प्रचार-प्रसार किया गया?

उत्तर — विदेशों में इसका प्रचार-प्रसार जहाँ इण्टरनेट के माध्यम से किया गया वहीं संघस्थ ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जी 'धर्माचार्य' के रूप में न्यूयार्क में आयोजित विश्वशांति शिखर सम्मेलन में गए और वहाँ भगवान ऋषभदेव के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया तथा विदेश में रहने वाले जैन लोगों ने भी संगोष्ठी आदि

करके वहाँ के अखबारों में प्रचार किया।

प्रश्न ९३ —इस महोत्सव का क्या उद्देश्य था?

उत्तर —इस महोत्सव का उद्देश्य जैन धर्म की प्राचीनता का प्रचार-प्रसार करना एवं भगवान ऋषभदेव के द्वारा बताए गए सिद्धान्तों को जन-जन में प्रसारित कर अहिंसा व शाकाहार का प्रचार करना था।

प्रश्न ९४ —क्या इस महोत्सव के द्वारा इन उद्देश्यों में सफलता प्राप्त हुई?

उत्तर —हाँ, इस महोत्सव के द्वारा लोगों ने जैनधर्म की प्राचीनता का परिज्ञान करने के साथ प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से लेकर चौबीसों तीर्थंकरों के जीवनदर्शन को जाना। सरकारी पाठ्यपुस्तकों में भी अब संशोधन करके भगवान ऋषभदेव का नाम जोड़ा गया है।

प्रश्न ९५ —वर्तमान में पूज्य माताजी की प्रेरणा से कौन सा रथ किस नाम से भारत में घूम रहा है?

उत्तर —वर्तमान में पूज्य माताजी की प्रेरणा से ''भगवान महावीर ज्योति'' नामक रथ भारत में भ्रमण कर रहा है।

प्रश्न ९६ —इस रथ का प्रवर्तन कहाँ से हुआ?

उत्तर —इस रथ का प्रवर्तन ''भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर'' (नालंदा) से हुआ।

प्रश्न ९७ —इस रथ में क्या दर्शाया गया है?

उत्तर —इस रथ में भगवान महावीर का वह सात खन का नंद्यावर्त महल 'जहाँ उन्होंने जन्म लिया था' दर्शाया गया है, साथ ही प्रथम खण्ड में भगवान का पालना दिखाया गया है और ऊपर शांतिनाथ जिन चैत्यालय है।

प्रश्न ९८ —इस रथ का उद्देश्य क्या है?

उत्तर —इस रथ का उद्देश्य जन-जन को भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर एवं उनके सर्वोदयी सिद्धान्तों से परिचित कराना है।

प्रश्न ९९ —क्या यह कुण्डलपुर में निर्मित होने वाले नंद्यावर्त महल की

प्रतिकृति है?

उत्तर —हाँ, यह कुण्डलपुर में निर्मित होने वाले नंद्यावर्त महल की प्रतिकृति है।

प्रश्न १०० —कुण्डलपुर में नवविकसित तीर्थ का क्या नाम है?

उत्तर —कुण्डलपुर में नवविकसित तीर्थ को ''नंद्यावर्त महल'' के नाम से जाना जाता है।

प्रश्न १०१ —पूज्य माताजी की प्रेरणा से अहिच्छत्र तीर्थ पर कौन सा मंदिर बना है?

उत्तर —पूज्य माताजी की प्रेरणा से अहिच्छत्र तीर्थ पर ग्यारह शिखरों वाला विशाल ''तीस चौबीसी जिनमंदिर'' बना है।

प्रश्न १०२ —अहिच्छत्र का क्या पौराणिक कथानक है?

उत्तर —अहिच्छत्र में भगवान पार्श्वनाथ ने उपसर्ग सहन कर दिव्य केवलज्ञान प्राप्त किया था।

प्रश्न १०३ —तीस चौबीसी मंदिर की यह योजना माताजी ने कब प्रदान की थी?

उत्तर —यह योजना पूज्य माताजी ने सन् १९९३ में अयोध्या विहार के मध्य अहिच्छत्र मंगल पदार्पण के अवसर पर प्रदान की थी।

प्रश्न १०४ —पूज्य माताजी ने सनावद (मध्यप्रदेश) में कौन सी योजना प्रदान की?

उत्तर —पूज्य माताजी ने सनावद में भारत के प्रथम नवोदित तीर्थ ''णमोकार धाम'' की योजना प्रदान की।

प्रश्न १०५ —सनावद किनकी जन्मभूमि है?

उत्तर —सनावद नगरी पूज्य माताजी के शिष्य पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर महाराज तथा अनेक मुनिराजों की जन्मभूमि है।

प्रश्न १०६ —णमोकार धाम की यह योजना माताजी ने कब प्रदान की?

उत्तर —यह योजना माताजी ने सन् १९९६ में मांगीतुंगी विहार के मध्य सनावद पदार्पण के अवसर पर प्रदान की।

प्रश्न १०७ —क्या पूज्य माताजी की प्रेरणा से और कहीं भी कोई रचनाएं बनी हैं?

उत्तर —हाँ, पूज्य माताजी द्वारा अयोध्या एवं मांगीतुंगी विहार के मध्य लगभग ५० स्थानों पर अनेक निर्माण प्रेरणाएं प्रदान की गई हैं जिनमें से कई पूर्ण हो चुकी हैं एवं कई निर्माणाधीन हैं।

प्रश्न १०८ —जैन सिद्धान्तों का मर्म समझाने हेतु माताजी की प्रेरणास्वरूप विशेष प्रशिक्षण शिविर का आयोजन कहाँ किया गया?

उत्तर —जैन सिद्धान्तों का मर्म समझाने हेतु माताजी की प्रेरणास्वरूप विशेष प्रशिक्षण शिविर का आयोजन सन् १९६९ में जयपुर चातुर्मास के मध्य किया गया।

प्रश्न १०९ —इस शिविर का मुख्य विषय क्या था?

उत्तर —इस शिविर का मुख्य विषय था-''जैन ज्योर्तिलोक''।

प्रश्न ११० —जैन ज्योर्तिलोक में किस विषय का ज्ञान करवाया गया?

उत्तर —जैन ज्योर्तिलोक में सूर्य-चन्द्र के बिम्बों के प्रमाण एवं उनके भ्रमण आदि का विशेष ज्ञान विद्वत्वर्ग को कराया गया।

प्रश्न १११ —क्या पूज्य माताजी की प्रेरणा से समय-समय पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार भी हुए हैं?

उत्तर —हाँ, पूज्य माताजी की प्रेरणा से समय-समय पर अनेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार भी हुए हैं।

प्रश्न ११२ —सन् १९८५ में जंबूद्वीप-हस्तिनापुर में कौन सा सेमिनार हुआ था?

उत्तर —सन् १९८५ में जंबूद्वीप-हस्तिनापुर में ''जैन गणित एवं त्रिलोक विज्ञान'' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में सम्पन्न हुआ।

प्रश्न ११३ —''भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन'' का आयोजन कहाँ और किस सन् में हुआ?

उत्तर —''भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन'' का आयोजन जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में सन् १९९८ में हुआ जिसमें देशभर के कई विश्वविद्यालयों से अनेक कुलपतिगण पधारे।

प्रश्न ११४ —इस सम्मेलन के माध्यम से उन्होंने किस विषय का ज्ञान प्राप्त किया?

उत्तर —इस सम्मेलन के माध्यम से उन्होंने भगवान ऋषभदेव को भारतीय संस्कृति एवं जैन धर्म के वर्तमानयुगीन प्रणेतापुरुष के रूप में जाना।

प्रश्न ११५ —जैनधर्म की प्राचीनता का ज्ञान कराने हेतु इतिहासकारों का कौन सा सम्मेलन कहाँ आयोजित हुआ?

उत्तर —११जून २००० को जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में ''जैनधर्म की प्राचीनता'' विषय पर आयोजित इतिहासकारों के सम्मेलन द्वारा पाठ्यपुस्तकों में जैनधर्म संबंधी भ्रांतियों के सुधार के लिए दिशा-निर्देश 'राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद' (N.C.E.R.T.) तक पहुंचाए गए।

प्रश्न ११६ —पूज्य माताजी को डी.लिट् की मानद उपाधि से किस विश्वविद्यालय ने सम्मानित किया?

उत्तर —पूज्य माताजी की अगाध विद्वत्ता के सम्मान हेतु डा. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद ने डि.लिट् की मानद उपाधि से सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया।

प्रश्न ११७ —डी.लिट् की मानद उपाधि उन्हें किस सन् में प्राप्त हुई?

उत्तर —डी.लिट् की मानद उपाधि ५ फरवरी सन् १९९५ को प्राप्त हुई।

प्रश्न ११८ —पूज्य माताजी को प्राप्त अनेक उपाधियों में से प्रमुख के नाम बताओ?

उत्तर —पूज्य माताजी को उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को देखते हुए साधुगण, विद्वत्वर्ग एवं समाज द्वारा विधानवाचस्पति, न्यायप्रभाकर, युगप्रवर्तिका, आर्यिका शिरोमणि, गणिनीप्रमुख, सिद्धान्तकल्पतरुकलिका, चारित्रचन्द्रिका, वाग्देवी, राष्ट्रगौरव, विश्वविभूति आदि अनेक उपाधियों से समय-समय पर अलंकृत किया गया है।

प्रश्न ११९ —राष्ट्रगौरव की उपाधि उन्हें कहां और किसके द्वारा प्रदान की गयी ?

उत्तर —राष्ट्रगौरव की उपाधि उन्हें दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में विश्वशांति महावीर विधान के सुअवसर पर महाराष्ट्र प्रान्त के भक्तों द्वारा प्रदान की गयी।

प्रश्न १२० —''तीर्थोद्धारिका'' की उपाधि उन्हें कहां और किसके द्वारा प्रदान की गयी?

उत्तर —''तीर्थोद्धारिका'' की उपाधि उन्हें जन्मभूमि टिकैतनगर में सन् १९९४ के चातुर्मास के मध्य जैन समाज द्वारा प्रदान की गयी।

प्रश्न १२१ —विश्व की सबसे ऊँची १०८ फुट मूर्ति निर्माण की प्रेरणा पूज्य माताजी ने कहां प्रदान की?

उत्तर —यह प्रेरणा पूज्य माताजी ने मांगीतुंगी (महा.) में प्रदान की। जिसमें भगवान ऋषभदेव की १०८ फुट प्रतिमा का निर्माण कार्य वहाँ चल रहा है।

प्रश्न १२२ —मांगीतुंगी में माताजी की प्रेरणा से किस नये मंदिर का निर्माण हुआ है?

उत्तर —सन् १९९६ में सहस्रकूट कमलमंदिर का निर्माण मांगीतुंगी (महाराष्ट्र) में हुआ है।

प्रश्न १२३ —नारी शक्ति को सृजनात्मक कार्यों में अग्रसर करने हेतु पूज्य माताजी की प्रेरणा से कौन सी संस्था बनी है?

उत्तर —सन् १९९६ में ''अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन'' नाम की संस्था बनी है, देशभर में जिसकी सैकड़ों इकाईयां है।

प्रश्न १२४ —पूज्य माताजी की प्रेरणा से अनेकों तीर्थों का उद्धार हुआ उनमें से ५ तीर्थों के नाम बताइये?

उत्तर —पूज्य माताजी की प्रेरणा से विकसित हुए तीर्थों में ५ तीर्थ हैं-हस्तिनापुर, अयोध्या, मांगीतुंगी, प्रयाग, अहिच्छत्र।

प्रश्न १२५ —प्रयाग में पूज्य माताजी की प्रेरणा से कौन सा तीर्थ बना?

उत्तर —तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण प्रयाग में हुआ है।

प्रश्न १२६ —क्या यह नूतन तीर्थ है या इसका पौराणिक महत्त्व भी है?

उत्तर —प्रयाग तीर्थ अत्यन्त प्राचीन तीर्थ है जहां आज से करोड़ों वर्ष पूर्व प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने युग की प्रथम जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की थी इसके साथ ही यहाँ से प्रथम गणधर, प्रथम गणिनी माता आदि का इतिहास भी जुड़ा है उन्हीं कथानकों को पुनजीर्वित करते हुए पूज्य माताजी की प्रेरणा से इस तीर्थ का निर्माण हुआ है।

प्रश्न १२७ —यह तीर्थ कहां पर अवस्थित है?

उत्तर —यह तीर्थ इलाहाबाद-बनारस हाइवे पर स्थित है।

प्रश्न १२८ —तपस्थली तीर्थ पर कौन-कौन से मंदिर निर्मित हुए हैं?

उत्तर —भगवान ऋषभदेव दीक्षाकल्याणक मंदिर, समवसरण रचना मंदिर एवं ७२ चैत्यालयों से युक्त विशाल कैलाशपर्वत का निर्माण हुआ है। उस ५० फुट ऊँचे पर्वत पर १४ फुट पद्मासन प्रतिमा ऋषभदेव की विराजमान है।

प्रश्न १२९ —इस तीर्थ के निर्माण की आवश्यकता क्यों पड़ी?

उत्तर —प्रयाग तीर्थ के करोड़ों वर्ष प्राचीन इतिहास से जनमानस को परिचित कराने के लिए तपस्थली तीर्थ का निर्माण हुआ है।

प्रश्न १३० —पूज्य माताजी की आगमोक्त लेखनी से भगवान महावीर के कौन से विधान की नई रचना हुई है?

उत्तर —सन् २००१ में ''विश्वशांति महावीर विधान'' नामक नूतन कृति की रचना हुई है।

प्रश्न १३१ —इस विधान में कितने अर्घ्य हैं?

उत्तर —इस विधान में २६०० अर्घ्य हैं।

प्रश्न १३२ —इस विधान का सबसे बड़ा आयोजन कहां हुआ?

उत्तर —इस विधान का सबसे बड़ा आयोजन भगवान महावीर २६००वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष के अंतर्गत राजधानी दिल्ली में अक्टूबर सन् २००१ में हुआ।

प्रश्न १३३ —महावीर स्वामी के २६००वें जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में पूज्य माताजी की प्रेरणा से कौन सा अविस्मरणीय कार्य सम्पादित हुआ है?

उत्तर —इस २६००वें जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर का विकास कार्य हुआ जो कि युगों-युगों तक अविस्मरणीय रहेगा।

प्रश्न १३४ —कुण्डलपुर तीर्थ विकास की आवश्यकता क्यों पड़ी?

उत्तर —वर्तमान में भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर का स्वरूप उपेक्षित था वहां मात्र एक छोटा सा जैन मंदिर था अतः भगवान महावीर के २६००वें जन्मकल्याणक महोत्सव के अवसर पर पूज्य माताजी की दृष्टि इस ओर गई और उन्होंने इसके विकास की प्रेरणा जैनसमाज को प्रदान की।

प्रश्न १३५ —भगवान महावीर की वास्तविक जन्मभूमि कुण्डलपुर है या वैशाली?

उत्तर —पूर्वाचार्यों द्वारा लिखित प्राचीन आर्षग्रंथों में मिले सभी प्रमाणों से

यह सिद्ध हो चुका है कि भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर है जो कि वर्तमान में बिहार प्रांत के नालंदा जिले में है वैशाली तो माता त्रिशला की जन्मभूमि है और महावीर स्वामी की ननिहाल है। अतः वह उनकी जन्मभूमि कैसे हो सकती है।

प्रश्न १३६ —कुण्डलपुर में कौन-कौन से मंदिर निर्मित हो रहे हैं?

उत्तर —कुण्डलपुर में भगवान महावीर जिनालय, भगवान ऋषभदेव जिनमंदिर, नवग्रह शांति मंदिर, त्रिकाल चौबीसी मंदिर, नंद्यावर्त महल एवं उसमें भगवान शांतिनाथ जिनालय का निर्माण हो रहा है।

प्रश्न १३७ —पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के गृहस्थावस्था के कितने भाई-बहन त्याग मार्ग पर निकले हैं?

उत्तर —पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के गृहस्थावस्था की दो बहनें और १ भाई त्याग मार्ग पर निकले हैं।

प्रश्न १३८ —उन दोनों बहनों के नाम क्या हैं?

उत्तर —परमपूज्य आर्यिकारत्न श्री अभयमती माताजी एवं प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी।

प्रश्न १३९ —पूज्य माताजी के वह भाई जो त्यागमार्ग पर निकले हैं उनका क्या नाम है?

उत्तर —उनका नाम ब्र. श्री रवीन्द्र कुमार जैन है।

प्रश्न १४० —क्या पूज्य माताजी की गृहस्थावस्था की माता ने भी दीक्षा ली थी?

उत्तर —हाँ, पूज्य माताजी की गृहस्थावस्था की माता मोहिनी ने भी दीक्षा ली थी।

प्रश्न १४१ —उन्होंने किनसे दीक्षा ली थी?

उत्तर —उन्होंने पूज्य माताजी की प्रेरणानुसार आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज से सन् १९७१ में आर्यिका दीक्षा ली थी।

प्रश्न १४२ —दीक्षा के बाद उन्हें आचार्यश्री ने क्या नाम प्रदान किया था?

उत्तर —दीक्षा के बाद उन्हें आचार्य श्री ने "आर्यिका रत्नमती माताजी" नाम प्रदान किया था।

प्रश्न १४३ —आर्यिका श्री रत्नमती माताजी किस संघ में थी?

उत्तर —आर्यिका श्री रत्नमती माताजी दीक्षा के पश्चात् पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के संघ में रही पुनः उनकी समाधि हो गयी।

प्रश्न १४४ —उनकी समाधि कहाँ और किसके सानिध्य में हुई?

उत्तर —उनकी सुन्दर समाधि जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में १५ जनवरी १९८५ (माघ कृ. ९) को पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में हुई।

प्रश्न १४५ —वे दीक्षित अवस्था में कितने वर्षों तक रहीं?

उत्तर —वे दीक्षित अवस्था में तेरह वर्षों तक रहीं।

प्रश्न १४६ —क्या पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के गृहस्थावस्था के पिता ने भी दीक्षा ली थी?

उत्तर —नहीं, पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के गृहस्थावस्था के पिता ने गृहस्थावस्था में ही समाधिमरण पूर्वक शरीर का त्याग किया था उन्होंने दीक्षा नहीं ली थी।

प्रश्न १४७ —राजगृही में पूज्य माताजी की प्रेरणा से कौन सा निर्माण हुआ है?

उत्तर —राजगृही चूँकि बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ भगवान की जन्मभूमि है अतः वहां नवनिर्मित मंदिर में सवा बारह फुट खड्गासन प्रतिमा मुनिसुव्रत भगवान की विराजमान हुई हैं।

प्रश्न १४८ —राजगृही में इनकी प्रेरणा से और कौन से कार्य हुए हैं?

उत्तर —जवाहर नवोदय विद्यालय प्रांगण में भगवान महावीर की पद्मासन प्रतिमा की स्थापना, विपुलाचल पर्वत की तलहटी

में मानस्तंभ (निर्माणाधीन है), विपुलाचल पर्वत पर ह्रीँ प्रतिमा की स्थापना, चित्रप्रदर्शनी, गौतमगणधर एवं सुधर्माचार्य गणधर के चरणों की स्थापना।

प्रश्न १४९ —भगवान महावीर की निर्वाणभूमि पावापुरी (बिहार) में इनकी प्रेरणा से क्या निर्माण हुआ है?

उत्तर —वहाँ पाँडुकशिला उद्यान में मंदिर का निर्माण एवं उसमें सवा ग्यारह फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा महावीर स्वामी की विराजमान हुई हैं।

प्रश्न १५० —गुणावा तीर्थ पर क्या प्रेरणा मिली?

उत्तर —गौतम गणधर की निर्वाणभूमि गुणावा में गौतम स्वामी का नया मंदिर एवं उसमें गौतम गणधर की सवा पाँच फुट प्रतिमा की स्थापना।

प्रश्न १५१ —शाश्वत सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर में भी क्या इनकी प्रेरणा से कोई कार्य हुआ है?

उत्तर —वहाँ भगवान ऋषभदेव के नये मंदिर का निर्माण एवं उसमें ऋषभदेव की विशाल पद्मासन प्रतिमा की स्थापना।

इस प्रकार अपने सर्वतोमुखी कार्यकलापों से पूज्य माताजी वर्तमान में स्वयं चलते-फिरते तीर्थ का रूप मानी जाती हैं। उनके चरणों में शत-शत नमन।

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन

स्थापना

पूजन करो जी-

श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की, पूजन करो जी।
जिनकी पूजन करने से, अज्ञान तिमिर नश जाता है।
जिनकी दिव्य देशना से, शुभ ज्ञान हृदय बस जाता है।।
उनके श्री चरणों में, आह्वानन स्थापन करते हैं।
सन्निधीकरण विधीपूर्वक, पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।।
पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।.....

पूजन करो जी

श्रीगणिनी ज्ञानमती माताजी की पूजन करो जी।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अष्टक

ज्ञानमती जी नाम तुम्हारा, ज्ञान सरित अवगाहन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।
मुझ अज्ञानी ने माँ जबसे, तेरी छाया पाई है।
तब से दुनिया की कोई छवि, मुझको लुभा न पाई है।।
ज्ञानामृत जल पीने हेतू, तव पद में मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।१।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन और सुगंधित गंधों, की वसुधा पर कमी नहीं।
लेकिन तेरी ज्ञान सुगन्धी, से सुरभित है आज मही।।
उसी ज्ञान की सौरभ लेने, को आतुर मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।२।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के नश्वर वैभव से, मैंने शाश्वत सुख था चाहा।
पर तेरे उपदेशों से, वैराग्य हृदय मेरे भाया।।
अक्षय सुख के लिए मुझे, तेरा प्रवचन ही साधन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।३।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने निज बाणों से, जब युग को था ग्रसित किया।
तुमने अपनी कोमल काया, लघुवय में ही तपा दिया।।
इसीलिए तव पद में आकर, शान्त हुआ मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।४।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मानव सुन्दर पकवानों से, अपनी क्षुधा मिटाते हैं।
लेकिन उनके द्वारा भी नहिं, भूख मिटा वे पाते हैं।।
आत्मा की संतृप्ति हेतु, तव वाणी मेरा भोजन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।५।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत के दीपों से जग ने, गृह अंधेर मिटाया है।
ज्ञान का दीपक लेकर तुमने, अन्तरंग चमकाया है।।

घृत का दीपक लेकर माता, हम करते तव प्रणमन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।६।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने ही अब तक मुझको, यह भव भ्रमण कराया है।
तुमने उन कर्मों से लड़कर, त्याग मार्ग अपनाया है।।
धूप जलाकर तेरे सम्मुख, हम करते तव पूजन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन हैं।।७।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कितने खट्टे मीठे फल को, मैंने अब तक खाया है।
तुमने माँ जिनवाणी का, अनमोल ज्ञानफल खाया है।।
तव पूजनफल ज्ञाननिधी, मिल जावे यह मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।८।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा

पिच्छि कमण्डलुधारी माता, नमन तुम्हें हम करते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।
युग की पहली ज्ञानमती के, चरणों में अभिवन्दन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेर मन भी पावन है।।९।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

शेरछंद

हे माँ तू ज्ञान गंग की पवित्र धार है।
तेरे समक्ष गंगा की लहरें बेकार हैं।।
उस धार की कुछ बूँदों से जलधार मैं करूँ।
वह ज्ञान नीर मैं हृदय के पात्र में भरूँ।।
शांतये शांतिधारा.....।।

स्याद्वाद अनेकान्त के उद्यान में माता।
बहुविध के पुष्प खिले तेरे ज्ञान में माता।।
कतिपय उन्हीं पुष्पों से मैं पुष्पांजलि करूँ।
उस ज्ञानवाटिका में ज्ञान की कली बनूँ।।
दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्.....।।

जयमाला

दोहा

ज्ञानमती को नित नमूँ, ज्ञान कली खिल जाय।
ज्ञानज्योति की चमक में, जीवन मम मिल जाय।।

धुन–नागिन–मेरा मन डोले.....।

हे बालसती, माँ ज्ञानमती, हम आए तेरे द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।
शरद पूर्णिमा दिन था सुन्दर, तुम धरती पर आईं।
सन् उन्निस सौ चौंतिस में माँ मोहिनी जी हर्षाईं।।माता...।।
थे पिता धन्य, नगरी भी धन्य, मैना के इस अवतार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।१।।
बाल्यकाल से ही मैना के, मन वैराग्य समाया।
तोड़ जगत के बंधन सारे,छोड़ी ममता माया।।माता....।।
गुरु संग मिला, अवलम्ब मिला, पग बढ़े मुक्ति के द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।२।।
शान्तिसिन्धु की प्रथम शिष्यता, वीरसिन्धु ने पाई।
उनकी शिष्या ज्ञानमती जी ने,ज्ञान की ज्योति जलाई।माता....।।
शिवरागी की, वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल रे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।३।।
माता तुम आशीर्वाद से, जम्बूद्वीप बना है।
हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर, कैसा अलख जगा है।।माता....।।
ज्ञान ज्योति चली, जग भ्रमण करी, तेरे ही ज्ञान आधार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।४।।

तीर्थ अयोध्या, मांगीतुंगी का विकास करवाया।
फिर प्रयाग में तपस्थली का, नूतन तीर्थ बनाया।। माता....।।
प्रभु समवसरण, रथ हुआ भ्रमण, श्री ऋषभदेव के नाम का,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।५।।
कुण्डलपुर तीरथ विकास की, नई प्रेरणा आई।
महावीर की जन्मभूमि में, अगणित खुशियाँ छाईं।।माता...।।
महावीर ज्योति, रथ से उद्योत, कर दिया पुनः संसार में,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।६।।
तीर्थंकर की जन्मभूमियों, का विकास करवाया।
उनके कल्याणक तीर्थों का जीर्णोद्धार कराया।।माता.....।।
संदेश दिया, उपदेश दिया, भावना हुई साकार है,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।७।।
यथा नाम गुण भी हैं वैसे, तुम हो ज्ञान की दाता।
तुम चरणों में आकर के हर, जनमानस हर्षाता। ।माता....।।
साहित्य सृजन, श्रुत में ही रमण, कर चलीं स्वात्म विश्राम पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।८।।
गणिनी माता के चरणों में, यही याचना करते ।
कहे ''चन्दनामती'' ज्ञान की , सरिता मुझमें भर दे।।माता.....।।
ज्ञानदाता की, जगमाता की, वन्दना करूँ शतबार मैं,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।९।।

दोहा

लोहे को सोना करे, पारस जग विख्यात।
तुम जग को पारस करो, स्वयं ज्ञानमती मात।।१०।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

ब्राह्मी माता के सदृश, ज्ञानमती जी मात।
सदी बीसवीं की प्रथम, क्वांरी कन्या आप।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

गणिनी ज्ञानमती माताजी की वैराग्य भावना

दोहा

सिद्ध हुए जो भी मनुज, कर्म अरी को जीत।
उनके पद को नमन कर, करूँ सिद्धि से प्रीत।।१।।

भव भव की जो भावना, भाई इस भव माँहि।
वही सफल हो कामना, हो भव का भ्रम नाहिं।।२।।

शेर छंद

संसार के दुख से हुए भयभीत जो प्राणी।
उनके लिए हितकारी प्रभु जिनेन्द्र की वाणी।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।३।।

नारी व नर सभी की आतमा है एक सी।
सबमें छिपी भगवान आतमा है एक सी।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।४।।
कुछ पूर्व के संस्कार से वैराग्य मिल गया।
पुरुषार्थ के निमित्त सोया भाग्य खिल गया।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।५।।

संसार को तज सकते हैं संसार में रह कर।
जीवन के किसी क्षण में भी वैराग्य ग्रहण कर।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।६।।

माँ के दहेज में मिले इक ग्रंथ को पढ़ा।
जिससे हृदय में ज्ञान औ वैराग्य था बढ़ा।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।७।।

संसार में अनादिकाल से भ्रमण हुआ।
अब पुण्य से जिनधर्म का अवलम्ब मिल गया।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।८।।

माता-पिता भाई बहन कोई न हैं अपने।
सोचो तो सभी लोग हैं संसार के सपने।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।९।।
जग में प्रसिद्ध लोक मूढ़ताओं को रोका।
है कर्म का सिद्धान्त अटल शेष सब धोखा।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।१०।।

प्रभु भक्ति से टल सकती है अकाल मृत्यु भी।
समझाया सबको इसके सिवा व्यर्थ है सभी।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।११।।

पग पंक में रख धोने से अच्छा है न रखना।
सोचा यही भव पंक में पग ही नहीं रखना।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।१२।।

अकलंक के नाटक से ग्रहण की यही शिक्षा।
गृहपंक को तज ले ली ब्रह्मचर्य की दीक्षा।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।१३।।

आगे बढ़ीं तो ज्ञानमती मात बन गईं।
इस युग की प्रथम बाल ब्रह्मचारिणी हुईं।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।१४।।
कुछ पूर्व पुण्य से अगाध ज्ञान मिल गया।
स्वयमेव कठिन ग्रंथों का अनुवाद कर दिया।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।१५।।

चाहे बनाओ शिष्य या तीरथ विकास हो।
संयम पले निर्विघ्न तो सब कुछ ही सार्थ हो।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।१६।।

चारित्र चक्रवर्ति शांतिसिंधु से लेकर।
देखा है सात पीढ़ियों से संघ चतुर्विध।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।१७।।

कलियुग में त्याग मार्ग है यद्यपि बहुत कठिन।
होता है तो भी साधु और साध्वी का दर्शन।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।१८।।

है त्याग से पवित्र जिनकी काया का कण-कण।
सब लाभ लेते उनकी तपस्या का प्रतिक्षण।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।१९।।
जिनकी चरणरज से धरा बनती हैं स्वर्ण सम।
जिन प्रेरणा से होता है जंगल में भी मंगल।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।२०।।

जीवन से जिनके सीखना है त्याग तपस्या।
जो हैं प्रसिद्ध बीसवीं सदी की विशल्या।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।२१।।

प्रभु नाम जिनके रोम-रोम में है समाया।
प्रभु नाम को ही जिनने विश्व भर में गुंजाया।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।२२।।

उन ज्ञानमती मात को शत-शत नमन करूँ।
उनके चरण में ''चन्दनामती'' सुमन धरूँ।।
वैराग्य भावना है ज्ञानमती मात की।
गणिनीप्रमुख हुईं जो बीसवीं शताब्दि की।।२३।।

दोहा

यह वैरागी भावना, पढ़ो भव्य मन लाय।
फिर विराग की साधना, करो चित्त हरषाय।।२४।।

भजन

तर्ज– फूलों सा चेहरा तेरा.....

इस युग की माँ शारदे, तू धर्म की प्राण है।
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।। टेक.।।
महावीर प्रभु के शासन में अब तक,
कोई भी नारी न ऐसी हुई।
साहित्य लेखन करने की शक्ति,
तुझमें न जाने कैसे हुई।।
शास्त्र पुराणों में, भक्ति विधानों में, तेरा प्रथम नाम है विश्व में–2
कलियुग की माँ भारती, पूनो का तू चांद है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग.....
।।1।।
तीर्थंकरों की जन्मभूमि का,
उत्थान माता तुमने किया।
हस्तिनापुरी में जम्बूद्वीप को,
साकार माता तुमने किया।।
तीर्थ अयोध्या की, कीर्ति प्रसारित की, मस्तकाभिषेक आदिनाथ का हुआ–2
तू जग की वागीश्वरी, धरती का सम्मान है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग.....।।2।।
गणिनी शिरोमणि तेरी तपस्या,
का लाभ इस वसुधा को मिला।
चारित्र चक्री गुरु के सदृश ही,
''चन्दना'' इक पुष्प जग में खिला।
पुष्प महकता है, चाँद चमकता है, ज्ञानमती माता के रूप में–2
युग युग तू जीती रहे, हम सबके अरमान हैं,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग.....।।3।।

भजन

तर्ज–मनिहारों का रूप.....

शारद माता का रूप दिखाया,
ज्ञान का तूने अलख जगाया।। टेक.।।
दीक्षा लेती न थीं क्वांरी कन्या यहाँ,
बीसवीं सदि में तुमने प्रथम पद लिया।
ज्ञानमति नाम तब तूने पाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।। शारद.।। 1।।
कोई साहित्य रचना न की साध्वी ने,
सैकड़ों ग्रन्थ अब रच दिए मात ने।
कुन्दकुन्द का पथ दरशाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।। शारद.।। 2।।
जैन भूगोल रचना नहीं थी कहीं,
मात्र प्राचीन ग्रन्थों में वह थी कही।
जम्बूद्वीप का रूपक दिखाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।। शारद.।। 3।।
जिनवरों की जनमभूमि विकसित न थीं,
प्रेरणा उनके उद्धार की माँ ने दी।
ऋषभ महावीर नाम गुंजाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।। शारद.।। 4।।
जैन संस्कृति की तू इक धरोहर है मां,
युग युगों तक जिए तू कहें ''चन्दना''।
धरती चाहे सदा तेरी छाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।। शारद.।। 5।।

मंगल आरती

तर्ज–कभी राम बनके.....

भक्ति भाव लेकर, दीपक थाल लेकर,
गणिनी माता की आरती करें हम।।टेक।।
तुम ज्ञानमती कहलाईं,
तुम बालसती बन आईं,
दीपक हाथ लेकर, सबको साथ लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।१।।

इतिहास की तुम निर्मात्री,
कई तीर्थों की प्रेरणादात्री,
नई याद लेकर, फरियाद लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।२।।

जम्बूद्वीप बना है धरा पर,
जिससे चमक रहा हस्तिनापुर,
वही याद लेकर, भक्ति साथ लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।३।।

मांगीतुंगी अयोध्या में जाकर,
किया निर्माण नूतन वहाँ पर,
वही याद लेकर, भक्ति साथ लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।४।।

पुनः तीरथ प्रयाग बनाया,
ऋषभ जिनवर का नाम गुंजाया,
पुण्यधाम लेकर, तेरा नाम लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।५।।

वीर जन्मभूमि का यश बढ़ाया,
कुण्डलपुर का विकास कराया,
श्रुत का सार लेकर, आधार लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।६।।

तुम युग-युग जिओ मेरी माता,
''चन्दना'' गाएँ सब तेरी गाथा,
श्रद्धाभाव लेकर, दीपक थाल लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।७।।